गुलाम, बड़े प्लांटेशन्स पर कैसे रहते थे?

गुलाम, बड़े प्लांटेशन्स पर कैसे रहते थे?

विषयवस्तु

बिक्री के लिए लोग

वो 10 साल का था और वह अपनी रोती हुई मां के पास खड़ा था. वे अश्वेत थे और दोनों बिक्री के लाए गए थे. क्षण भर पहले, लड़के ने अपने पिता को एक गोरे व्यक्ति के हाथ बिकते देखा था. गोरे मालिक ने उस गुलाम को ऐसे देखा था मानो वो कोई जानवर हो. फिर उसके पिता को घसीटा गया, और उन्होंने तड़पते हुए अपने छोटे से परिवार को देखा. अब मां और उसके बच्चे को अलग-अलग बेचने की बारी थी...
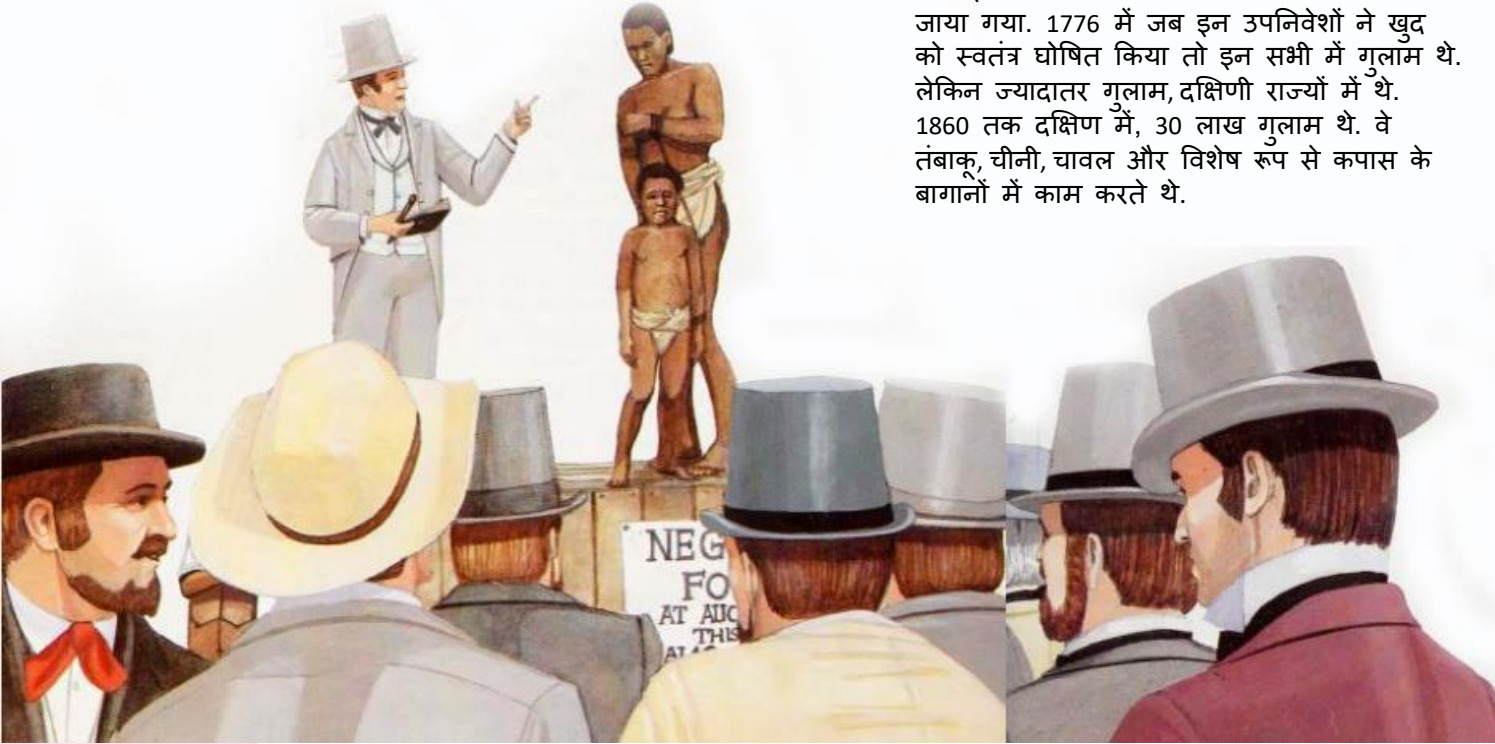
परिवारों का इस तरह बंटना शायद सबसे बुरी बात थी जो 150 साल पहले अमेरिका के दक्षिणी राज्यों में दासों के साथ होती थी. मृत्यु, कम-से-कम उन्हें दुख से मुक्ति तो दिला देती.

गुलामी अपने आप में उतनी ही पुरानी है जितनी कि मानव जाति, और वो आज भी दुनिया के कई हिस्सों में फल-फूल रही है. लेकिन 1600 के दशक में गुलामी बहुत तेजी से बढ़ी. अफ्रीका से अश्वेतों को बड़ी संख्या में दक्षिण अमेरिका, वेस्ट इंडीज और इंग्लैंड के उत्तरी अमेरिकी उपनिवेशों में ले जाया गया. 1776 में जब इन उपनिवेशों ने खुद को स्वतंत्र घोषित किया तो इन सभी में गुलाम थे. लेकिन ज्यादातर गुलाम, दक्षिणी राज्यों में थे. 1860 तक दक्षिण में, 30 लाख गुलाम थे. वे तंबाकू, चीनी, चावल और विशेष रूप से कपास के बागानों में काम करते थे.

ऊपर: 1619 में जेम्सटाउन में, अश्वेत गुलामों की एक किश्त आई. यह उस समय की बात है जब अफ्रीका और अमेरिका के बीच, गुलामों का व्यापार खूब फल-फूल रहा था.

गुलाम व्यवसाय

1492 में क्रिस्टोफर कोलंबस के नई दुनिया में पहुंचने के ठीक पच्चीस साल बाद, पहले दुखी-अफ्रीकी दासों को स्पेन के लोग द्वारा वहां लाया गया. जल्द ही अन्य राष्ट्र भी इस मानव व्यापार में शामिल हो गए, जिनमें पुर्तगाली, फ्रांसीसी, डच और अंग्रेज शामिल थे.

1600 के दशक में दास व्यापार में तब उछाल आना शुरू हुआ जब कई समुद्री देशों ने वेस्ट इंडीज के उपनिवेशों का अधिग्रहण किया, जहाँ बहुत चीनी पैदा होती थी.

अठारहवीं शताब्दी में गुलाम व्यापार को, अंग्रेजों द्वारा अच्छी तरह से संगठित किया गया. लेकिन वो केवल इसलिए संभव हो पाया क्योंकि अफ्रीकी शासक अपने लोगों को, यूरोपीय लोगों को बेचने को तैयार थे.

एक जहाज ब्रिटिश या यूरोपीय बंदरगाह से अफ्रीका के पश्चिमी तट के लिए रवाना होता. जहाज़ में स्थानीय प्रमुखों के लिए सामान लदा होता था.

दासों को उनके घरों से निकटतम बंदरगाह तक ले जाया जा रहा है.

नीचे: नीलामी के लिए ले जाने से पहले दास घाट पर प्रतीक्षा करते हुए.
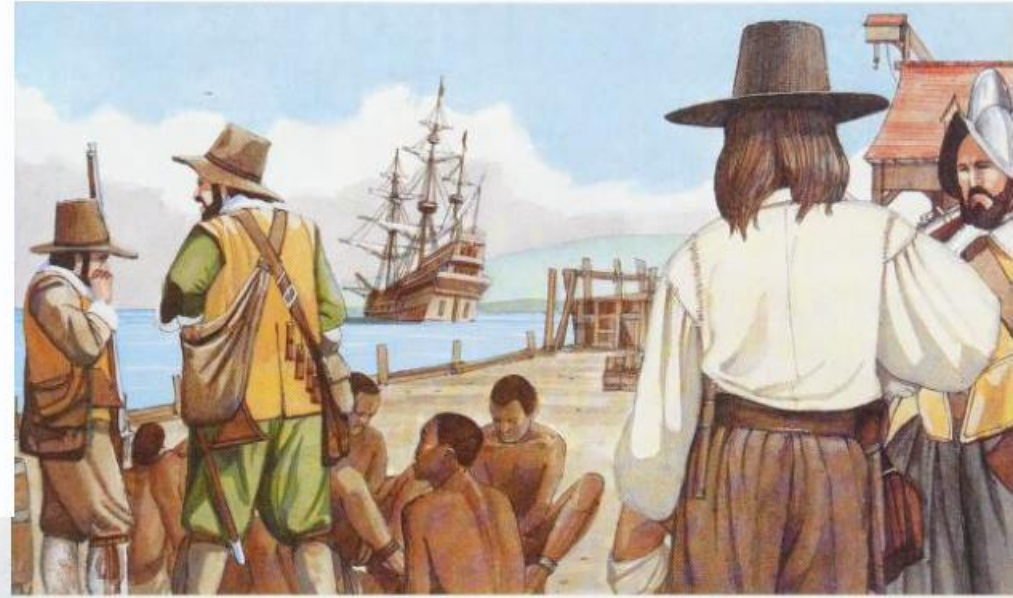
पहले उन्होंने अन्य जनजातियों के पकड़े लोगों को सौंपा, और फिर अपनी स्वयं की जनजाति के लोगों को पैसों के लिए बेंचा.

गुलामों को भयानक परिस्थितियों में, अटलांटिक पार ले जाया जाता था और फिर उन्हें बेच दिया जाता था. चीनी, कपास, तंबाकू और अन्य सामानों से लदे जहाज यूरोप लौटते थे. इस व्यापार को त्रिकोणीय व्यापार कहा जाता था, जैसा कि मानचित्र पर एक नज़र डालने से समझ आ जाएगा.

यूरोप, अफ्रीका और अमेरिका के बीच 'त्रिकोणीय व्यापार'.

महासागर को पार करना

गुलामों को भयानक परिस्थितियों में अटलांटिक के पार भेजा जाता था.
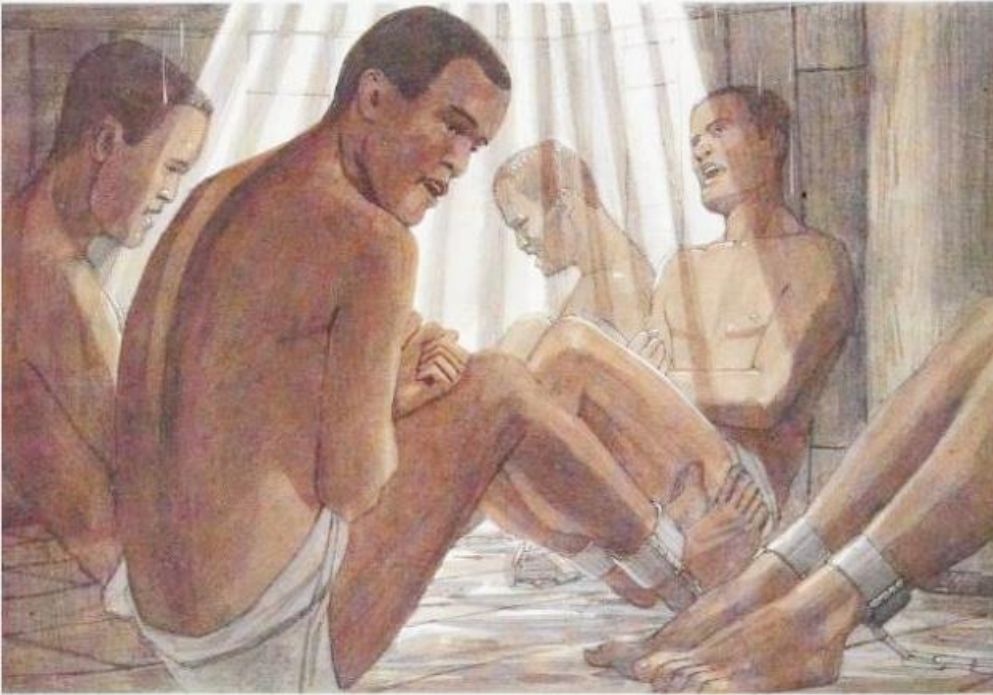
गुलाम जहाज, तैरते हुए नर्क थे. उनमें से सबसे बड़ा जहाज़ 700 दासों को एक-साथ ले जा सकता था. गुलामों को डेक के नीचे पैक किया जाता था. प्रत्येक पुरुष दास को उसके पड़ोसी से 1.5 मीटर (5 फीट) या उससे कम ऊँची काल कोठरी में जंजीरों से बंधा जाता था. किसी गुलाम के रहने की जगह एक ताबूत के आकार की होती थी. महिलाओं और बच्चों को कहीं और रखा जाता था, लेकिन कम-से-कम उन्हें जंजीरों से नहीं बांधा जाता था.

सभी दासों को भोजन के लिए दिन में दो बार डेक पर ले जाया जाता था. उनसे व्यायाम भी करवाया जाता था. उन्हें ऊपर और नीचे कूदने के लिए मजबूर किया जाता था जिसके लिए उन्हें चाबुक से मारा जाता था. अभ्यास के दौरान जहाज का चालक दल, दासों के भयानक गंदे जेल तहखाने को साफ करता था. फिर दासों को वापिस नीचे खदेड़कर ले जाया जाता था.

कुछ कप्तान अपने जहाजों को दासों से ओवरलोड भरते थे ताकि भीड़भाड़ से होने वाली मौतों के बावजूद कुछ गुलाम ज़रूर जीवित बच जाएं. दूसरे कप्तान कुछ बेहतर परिस्थितियों के कारण बेचने के लिए कम गुलाम लेकर जाते थे. औसत यात्रा में पाँच भयानक सप्ताह लगते थे, लेकिन कुछ में अधिक समय भी लग सकता था. दासता अपने आप में शायद ही उतनी भयानक नहीं थी जितनी कि दासों की यात्रा थी.

TO BE SOLD on board the Ship *Bance Yland*, on tuesday the 6th of *May* next, at *Afhley Ferry*; a choice cargo of about 250 fine healthy

NEGROES,

juft arrived from the Windward & Rice Coaft. —The utmoft care has already been taken, and fhall be continued, to keep them free from the leaft danger of being infected with the SMALL-POX, no boat having been on board, and all other communication with people from *Charles-Town* prevented.

Auftin, Laurens, & Appleby.

N. B. Full one Half of the above Negroes have had the SMALL-POX in their own Country.

दायें: एक पोस्टर जिसमें गुलामों की बिक्री का विज्ञापन छपा है.

ऊपर: गुलाम जहाज का एक चित्र दिखाता है कि कैसे दासों को अटलांटिक पार करने के लिए ठूस-ठूस कर पैक किया जाता था.

यात्रा के अंतिम दिनों में दासों को बेहतर भोजन दिया जाता था. जंजीरों, फोड़े-फुंसियों और मार-पीट से पैदा हुए दासों के घावों और जख्मों को बारूद और जंग के मिश्रण से छिपा दिया जाता थे जिससे गुलाम अधिक बिक्री योग्य बन सकें.

एक गुलाम नीलामी

किसी गुलाम को उसका मालिक एक जानवर, फर्नीचर, या कपास की एक गाँठ की तरह जब चाहे तब खरीद-बेच सकता था.

नीलामी से पहले, कोशिश की जाती थी कि गुलाम अच्छे दिखें. उन्हें नहलाया जाता और उन्हें नए कपड़े दिए जाते थे. बूढ़े दासों को, जवान दिखने के लिए उनके सफ़ेद बालों को तोड़ा या फिर काला रंगा जाता था. खरीदार उनकी इस तरह जांच करते थे जैसे कि वे कोई जानवर हों. उनकी पीठ पर कोड़ों के निशानों की जाँच इसलिए की जाती थी कि कहीं वो "शरारती" और परेशान करने वाले गुलाम तो नहीं थे.

दास नीलामियों में, हमेशा बहुत सारे खरीदार होते थे, क्योंकि नीलामी का, पोस्टरों और स्थानीय अखबारों में नोटिस द्वारा व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार किया जाता था.

एक गुलाम जोशिया हेंसन ने अपनी बिक्री का वर्णन किया जब वो एक लड़का था. उसके मालिक की मृत्यु हो गई थी और उसके बागान को बेचना पड़ा. पहले उसके भाई और बहन को बेचा गया, फिर उसकी माँ को. उसकी माँ ने खुद को खरीदार के चरणों में फेंक दिया, और उससे भीख मांगी कि वो उसके सबसे छोटे बच्चे जोशिया को भी खरीद ले. पर खरीदार ने, जोशिया की माँ को ज़ोर से लात मारी.

नीचे: गुलामों की नीलामी जारी है.

परिवार हमेशा एक नीलामी के बाद विभाजित होने से डरते थे.
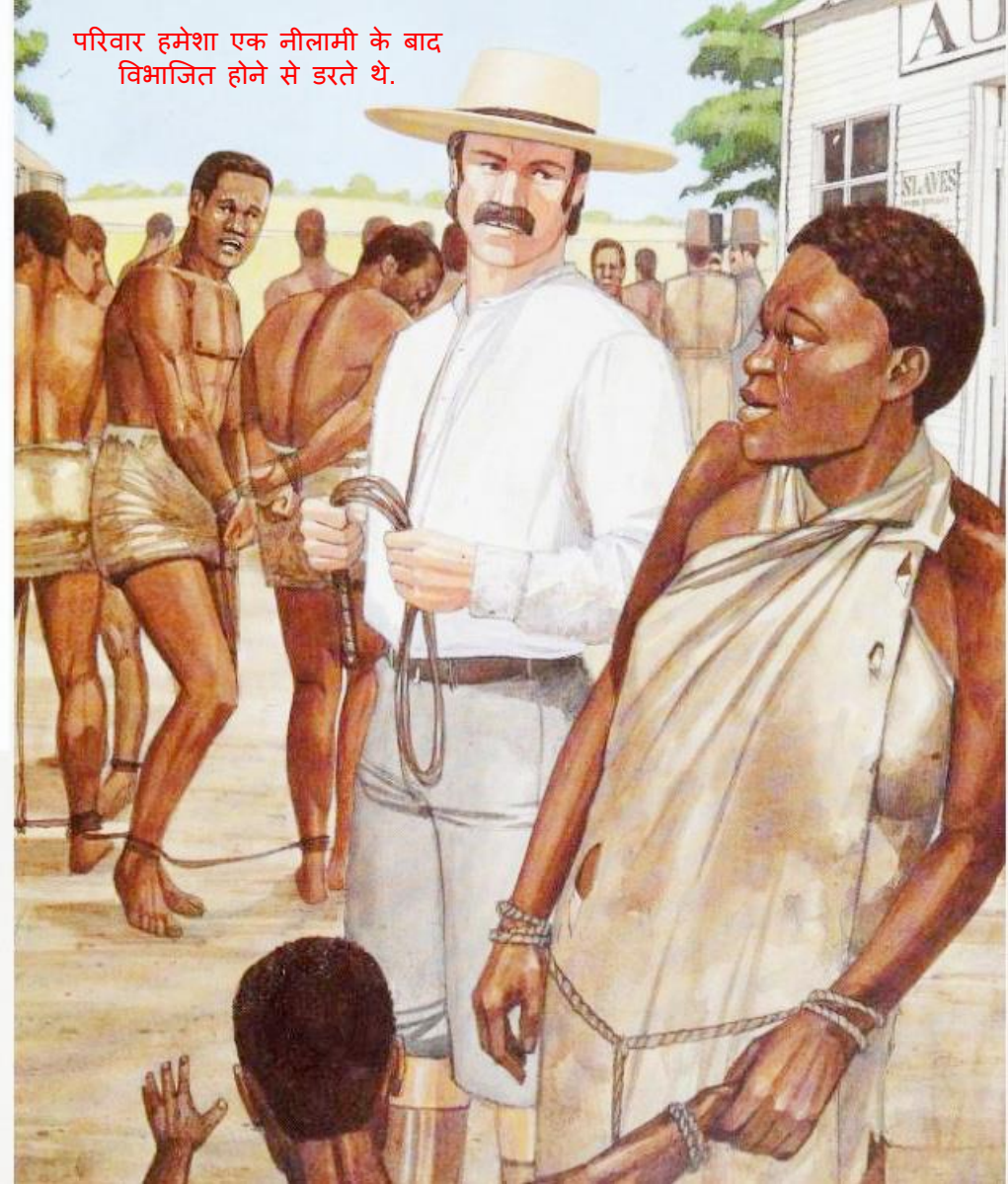
गुलामों के मालिक

गुलामी क्रूर थी, लेकिन सभी गुलाम मालिक वैसे नहीं थे. एक दयालु मालिक के साथ, अश्वेत दास, कई गरीब गोरों की तुलना में, बेहतर ज़िंदगी जीने की उम्मीद कर सकता था. कुछ दासों को, आमतौर पर गृहकार्य करने वाले गुलामों को, स्वतंत्रता मिल सकती थी अगर वे अपने स्वामी की अच्छी तरह सेवा करते.

कुछ मालिक बिल्कुल अलग होते थे. वे स्वयं कठोर और क्रूर होते थे और वे अपने निरीक्षकों को दासों को सताने, और कभी-कभी मार डालने की अनुमति तक देते थे. गुलामों का कोई अधिकार नहीं होता था. गुलाम का स्वामी ही तय करता था कि वो ज़िंदा रहेगा, या मरेगा.

जोज़ नाम के एक दास ने याद किया कि कैसे उसका मालिक उसे नियमित रूप से अपने एक मित्र के गुलामों की देखरेख के लिए भेजता था. जोज़ ने इतना अच्छा काम किया कि दोस्त ने उसे उसके मालिक से एक बड़ी रकम देकर उसे खरीद लिया. फिर उसके नए मालिक ने कहा कि वो जोज़ को कोड़े मारेगा. जोज़ ने पूछा कि इतनी अच्छी सेवा के बाद वो वैसा क्यों करेगा. उस आदमी ने कहा, "सबसे पहले मेरे काले गुलामों को यह सीखना चाहिए है कि मैं उनका मास्टर यानी मालिक हूं." फिर उसने दास जोज़ को चेतावनी दी कि अगर उसने विरोध किया तो उसे कोड़े मारकर जान से मार दिया जाएगा.

जोज़ ने वो 'सजा' सही, लेकिन उसने उत्तरी राज्यों में भागने का अपना मन बना लिया, जहां पर गुलामी पर पाबन्दी थी. और अंत में उसने वैसा ही किया. वो चंद भाग्यशाली लोगों में से एक था.

पारिवारिक जीवन

पारिवारिक जीवन, दासों के लिए बहुत मायने रखता था, लेकिन दास विवाहों का अक्सर दुखी अंत होता था. हालाँकि, दासों को विवाह करने की अनुमति थी, लेकिन श्वेत कानून उनके विवाह को मान्यता नहीं देता था. जैसा कि हमने देखा, गुलाम परिवारों को अक्सर विभाजित किया जाता था.

दास विवाह का उद्देश्य - जहाँ तक गोरों का संबंध था, गोरों के लिए अधिक दास पैदा करना था. फिर उनका उपयोग उनके मालिक द्वारा किया जा सकता था, या उन्हें बेचा जा सकता था. कुछ दास हालांकि, विशेष रूप से भाग्यशाली होते थे. किसी अच्छे स्वामी के लिए काम करने पर विवाह उन्हें निराशा से बचाता था.

गोरे स्वामी और ओवरसियर भी अक्सर काली दासियों का खूब फायदा उठाते थे. बाद में वे उनके बच्चों को भी, गुलाम जैसे बेच देते थे.

अपने घर के बाहर एक गुलाम परिवार.

ऊपर: बुकर वाशिंगटन - एक गुलाम जो बाद में प्रसिद्ध शिक्षक बने.

बुकर वाशिंगटन नामक एक पूर्व दास ने याद किया कि कैसे वो और उसका परिवार कभी भी खाने के लिए एक-साथ मेज पर नहीं बैठते थे. बच्चों को उनका भोजन वैसे दिया जाता था "जैसा कि वे गूंगे जानवर हों. यहाँ एक रोटी का टुकड़ा और वहाँ एक मांस का टुकड़ा." लेकिन बुकर वाशिंगटन, अपने लोगों का शिक्षक और प्रवक्ता बनने के लिए जीवित रहा.

कई दास कम उम्र में ही मर जाते थे. उनके एक कमरे के झोंपड़े में अक्सर, कई परिवार रहते थे. झोपड़ा कीटाणुओं से भरा होता था, और उसमें ठंड और बारिश दोनों आते थे.

वहां जानलेवा बीमारियां, जंगल की आग की तरह फैलती थी. ऐसा माना जाता था कि प्रत्येक 100 दासों में से केवल 4 ही, 60 वर्ष की आयु तक जीवित रहते थे.

ऊपर और नीचे: दास घर एक कमरे की झोंपड़ी होती थी, जिसमें अक्सर एक से अधिक दास परिवार रहते थे. वे घर कच्चे और ठंडे होते थे.

खेतों में काम करना

12 वर्ष की आयु तक गुलाम बच्चे खेतों में काम करने लगते थे; कई 10 वर्ष की आयु से ही काम शुरू कर देते थे. सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में दक्षिण में अधिकांश गुलाम - तंबाकू, चावल, चीनी और नील के बागानों पर काम करते थे. फिर, 1793 में, एली व्हिटनी नामक एक आविष्कारक ने 'कॉटन जिन' नामक एक मशीन बनाई. उससे पहले कपास के बीजों को हमेशा हाथ से, धीरे-धीरे ही अलग किया जाता था. 'कॉटन जिन' सख्त बीजों को सफेद रेशे से तेजी से अलग कर सकती थी. अमेरिका और ब्रिटेन के कपड़ा उद्योगों को, इस फाइबर की सख्त जरूरत थी और उससे कपास के कारोबार में तेजी आई. पर उसके साथ गुलामी भी बढ़ी क्योंकि कपास जल्द ही दक्षिण अमरीका की, प्रमुख फसल बन गई.

गुलाम औरतें और आदमी सूर्योदय से सूर्यास्त तक काम करते थे. कुछ को दोपहर में थोड़ा आराम करने की अनुमति मिलती थी. कुछ मालिक रात में चाँद की रोशनी में भी, अपने दासों से काम करवाते थे. गुलाम खुरदुरे, असहज कपड़े पहनते थे और उन्हें साल में एक बार मोटे जूते दिए जाते थे.

भाप से चलने वाली "कपास जिन". दास, कपास को गांठों में इकट्ठा करते हुए.

एक ओवरसियर यह सुनिश्चित करने के लिए दासों पर नज़र रखता था कि उनमें से कोई भी सुस्त न हो. कभी-कभी उसे चाबुक से लैस अश्वेत सहायकों की सहायता भी मिलती थी. खेत में अश्वेत गुलामों को गाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था क्योंकि इससे उनकी काम करने की इच्छा में सुधार होता था. जब कपास बोने, बीनने या जोतने का काम नहीं होता, तब गुलाम फार्म पर अन्य काम करते थे.

कपास के खेतों में काम करते हुए दास.
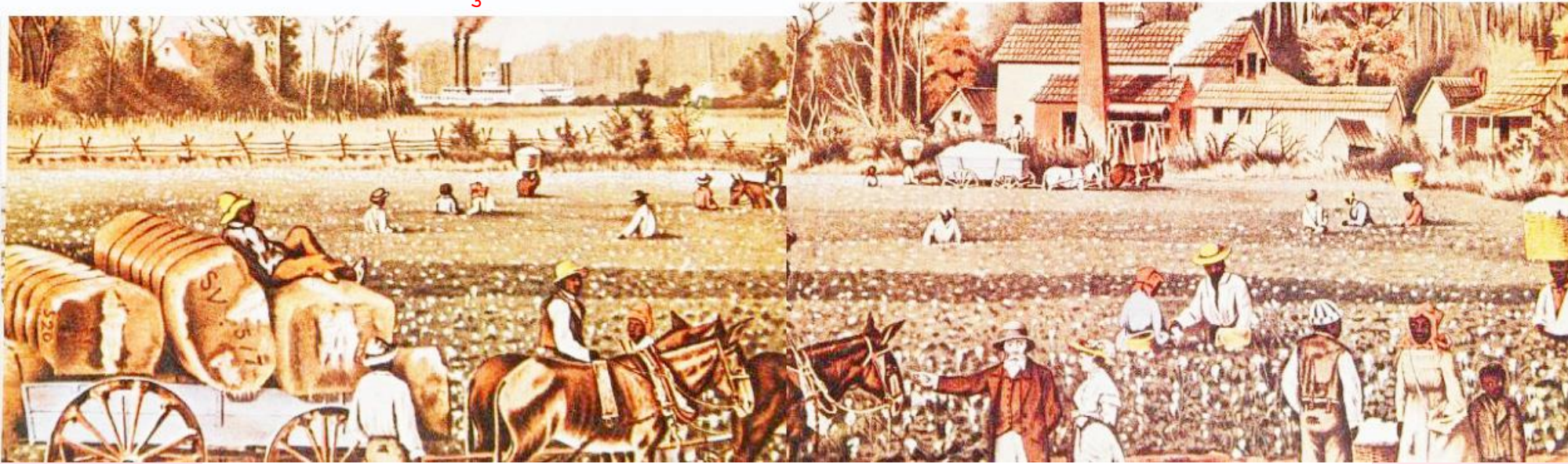
अन्य काम

ऊपर: ये गुलाम मिसिसिपी नदी पर नावों में पर कपास की गांठें लाद रहे हैं. नावें उस समय थोक परिवहन का आधार थीं.

कुछ दास कुशल कारीगर थे, जो बढ़ई या लोहार के रूप में काम करते थे. दासों को, कारखानों में, रेलमार्गों पर, नदी के ऊपर नावों पर और कोयला खदानों में में सबसे बदतर कामों पर लगाया जाता था. सबसे भाग्यशाली दास वो होते जो मालिक के घरों में काम करते थे, और जिनका मालिक बहुत क्रूर नहीं होता था.

इन दासों को भी कोड़े लगने या बेचे जाने का खतरा हमेशा बना रहता था, लेकिन अन्य गुलामों की तुलना में उनका जीवन अच्छा होता था.

गृह दास, फार्म गुलामों की तुलना में, बेहतर जीवन जीते थे. एक गुलाम पति अच्छे कपड़े पहनकर बटलर बन सकता था, उसकी पत्नी रसोइया या मालकिन की निजी नौकरानी हो सकती थी.

दास अपने कान खुले रखकर सुन सकते थे कि दुनिया में क्या हो रहा था. निजी दासों को अपने स्वामी और मालकिन के सामने गिड़गिड़ाना नहीं पड़ता था, न ही उन्हें अपनी आँखों और आवाजों को, नीचे करना पड़ता था, जैसा कि अन्य सभी दासों को अपने गोरे मालिकों की उपस्थिति में करना पड़ता था.

गृह दास होने का एक लाभ यह भी था कि अन्य दासों की तुलना में, उनके मुक्त होने की अधिक संभावना थी. खेतों पर काम करने वाले गुलामों के लिए, मुक्ति का एकमात्र मौका, भागकर बच निकलना होता था.

घर के दास, खेतों में काम करने वाले गुलामों की तुलना में, बेहतर जीवन जीते थे.
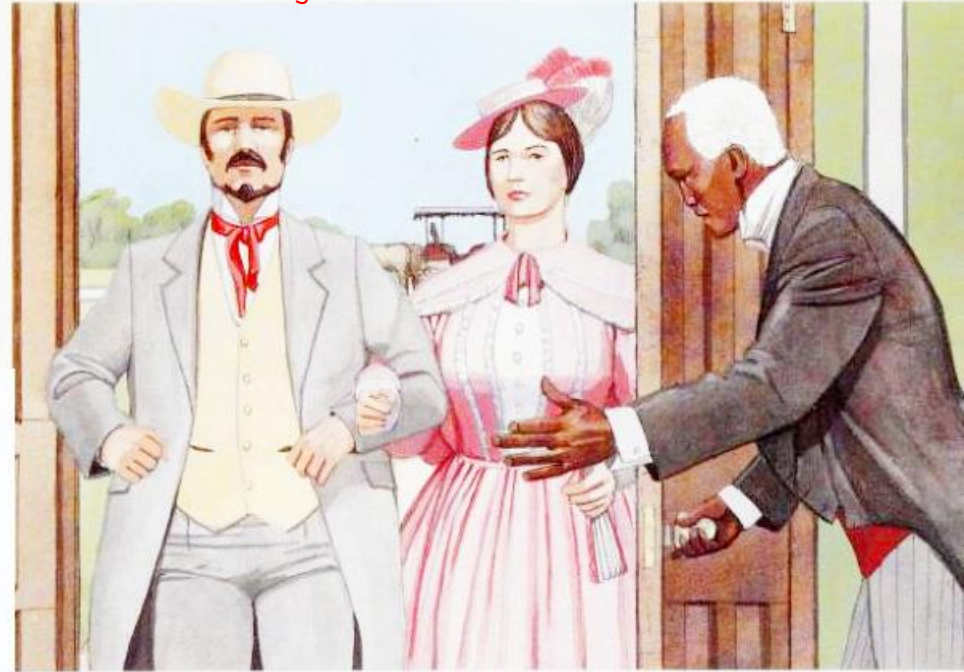
आराम, खाना और पीना

दासों के अवकाश समय का वर्णन करने के लिए "आराम" एक आदर्श शब्द नहीं होगा क्योंकि वो अक्सर थककर एकदम पस्त हो जाते थे. अधिकांश दासों के लिए रविवार उनके विश्राम का दिन होता था. कुछ दासों को शनिवार दोपहर को भी छुट्टी मिलती थी. उनके मालिक उन्हें खाली समय में धुलाई, मछली पकड़ने या बागवानी करने के लिए भी प्रोत्साहित करते थे.

दासों के जो थोड़ा खाली समय होता उसमें वे बागवानी या मछली पकड़ते थे.

कभी-कभी, दास खुद को खुश करने के लिए नृत्य करते थे.

दासों को कभी भी अच्छा खाना नहीं मिलता था, हालांकि घर के दास आमतौर पर फार्म के गुलामों से, बेहतर खाते थे. किसी खराब फार्म पर दासों का और भी बुरा हाल होता था. पूर्व गुलाम चार्ल्स बॉल ने लिखा कि उन स्थानों पर "गरीब नीग्रो को प्रति सप्ताह मकई का उसका हिस्सा, बिना नमक की हेरिंग मछली की चटनी, कुछ नमक के अलावा और कुछ भी नहीं दिया जाता था." गुलामों को कम राशन देना, मालिकों द्वारा उन्हें सजा देने का एक तरीका था.

फार्म गुलामों को मकई और सूअर की चर्बी का राशन मिलता था. अगर वो कोई मछली या जानवर पकड़ पाते, तो उनके लिए बेहतर होता था. अधिकांश दास उन्हें दी गई जमीन के टुकड़ों पर सब्जियां उगाते थे. खराब आहार के कारण उन्हें तमाम बीमारियां होती थीं और उनके दांत आमतौर पर सड़ जाते थे.

अपने आप को खुश करने के लिए, दास जब संभव होता तब नाचते थे, और प्रार्थना सभाओं में जाते थे, लेकिन वो अक्सर आराम - यानि कुछ भी नहीं करना चाहते थे.

धर्म

कई दास धर्म में सकून खोजते थे. वे मृत्यु के बाद आने वाली उस दुनिया की प्रतीक्षा करते थे जहां उन्हें लगता था कि वे मुक्त होंगे. अफ्रीका से आए कुछ गुलाम अपने पुराने धर्मों को अपने साथ अमेरिका लेकर आए. उनके क्रिया-कर्म कभी-कभी ईसाई धर्म के साथ मिल जाते थे, और वे दोनों ही, दासों को, उनके कठोर और मनहूस अस्तित्व से निकलने में मदद देते थे.

फ्रेडरिक डगलस, एक दास जो अपने अधिकारों के लिए भाग निकले थे, ने प्रार्थना की: "मैं अंतहीन दासता के सबसे गर्म नरक में हूं. हे भगवान मुझे बचाओ!! मैं गुलाम क्यों हूँ?"

नीचे: दास और उनके गोरे मालिक एक धार्मिक उपदेश सुनते हुए.
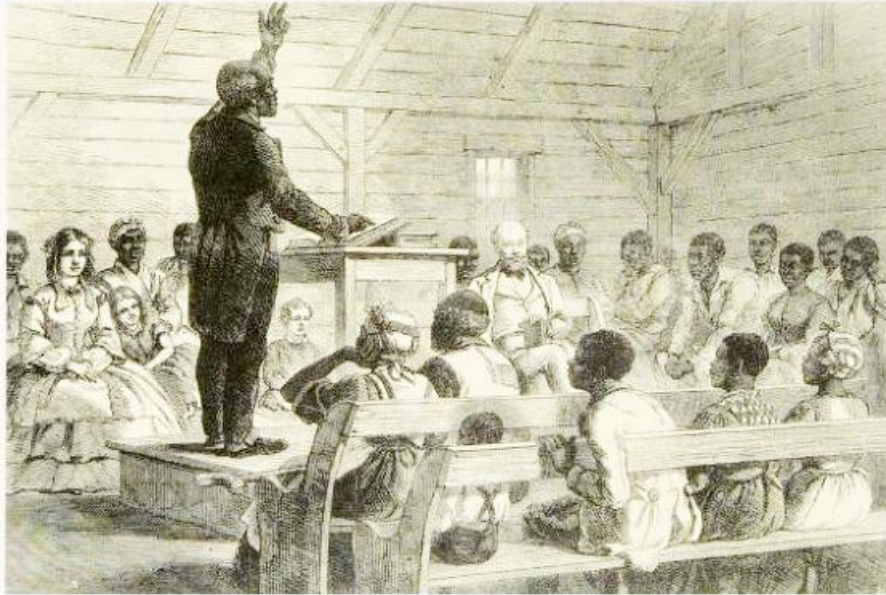
दायें: दासों को अक्सर अपने मृतकों को रात में ही दफनाना पड़ता था.

इसाबेल बॉमफ्री, एक भागी हुई दासी, ने उत्तर के लोगों को बताया कि कैसे भगवान चाहते थे कि वो उस भूमि के ऊपर-नीचे यात्रा करे और यात्रा के दौरान वो लोगों को गुलामी की असलियत के बारे में बताए.

दासों को रात में अपने मृतकों को इसलिए दफनाना पड़ता था ताकि उनके मालिक के काम में कोई हस्तक्षेप न हो. बाद में, वे एक स्मारक सेवा आयोजित करते थे और जश्न मनाते थे कि वो मृत व्यक्ति अब सब दुखों से मुक्त हो गया था. अनेक दासों के लिए धर्म का अर्थ गायन होता था. उनके गीतों को 'आध्यात्मिक-गीत' (स्पिरीटूयल्स) कहा जाता था. कुछ नीग्रो आध्यात्मिक-गीत, जैसे "डीप रिवर" और "स्विंग लो स्वीट चेरियट", आज भी गाए जाते हैं.

दंड

कोड़े मारना, दासों को सजा देने का एक सामान्य तरीका था.
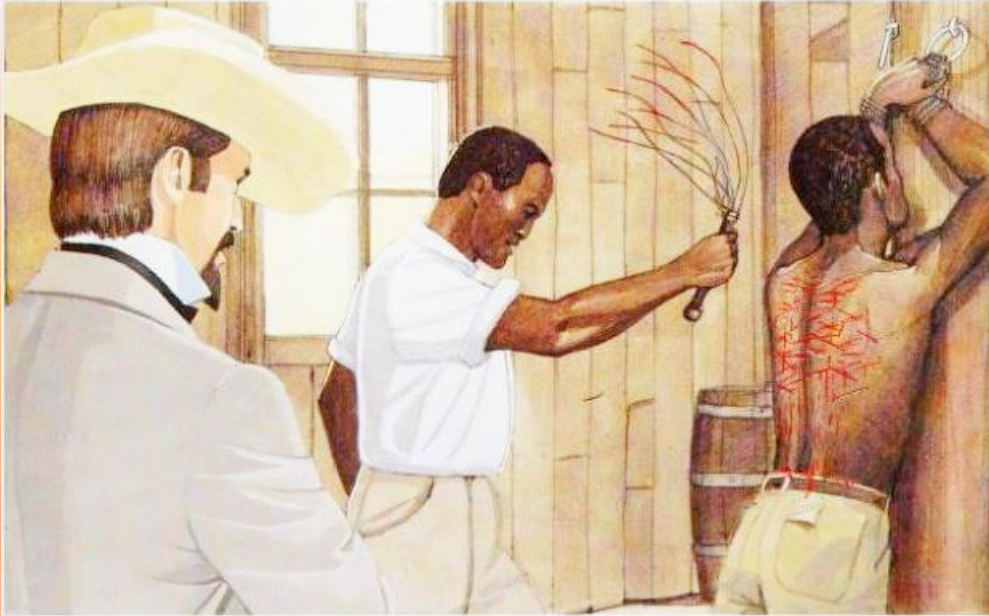
हालांकि एक गुलाम परिवार के लिए सबसे खराब सजा परिवार को विभाजित करके बेचा जाना था, पर गुलामों के लिए मानक सजा कोड़े मारना थी. पुरुष दासों और कभी-कभी महिलाओं को भी बेरहमी से पीटा जाता था. गुलाम मालिक, ओवरसियरों के साथ-साथ, प्रोफेशनल दास तोड़ने वालों को, दासों को कोड़े मारने के लिए पैसे देता था.

कोड़े मारने के लिए कच्चे चमड़े की पट्टियों के चाबुक उपयोग किए जाते थे. कोड़ों की संख्या पंद्रह और बीस के बीच में होती थी. भगोड़े - यानि पकड़े गए दास और अन्य 'अपराधियों' को 100 से अधिक कोड़े मारे जा सकते थे जिससे उनकी पीठ लहू-लुहान हो जाती थी.

ऐसा मालिक जो अपने दास को संक्रमण से खोना नहीं चाहता था, वो उसके घावों पर नमक का पानी छिड़कवाता था. उससे पीड़ा, कोड़े मारने से भी कहीं अधिक भयानक होती थी. अन्य दंडों में गुलाम को, जंजीरों से बांधना, और लोहे के कॉलर में जबरन बांधना शामिल था, जिनके कांटे बाहर निकले होते थे. उसके कारण बदनसीब पीड़ित गुलाम, आराम करने के लिए लेट भी नहीं सकता था.

सबसे बुरे अपराधों में से एक था अश्वेत गुलाम का, किसी गोरे आदमी को मारना. ऐसे दास को, जिससे वो दूसरों के लिए एक उदाहरण बने को आसानी से मौत के घाट उतारा जा सकता था. दास जोशिया हेंसन के पिता ने एक ओवरसियर से अपनी माँ की रक्षा करने की कोशिश की. उसे 100 कोड़े पड़े, फिर उसके दाहिने कान को लकड़ी के खम्बे पर कील से ठोका गया और उसके शरीर से अलग कर दिया गया.

दासों को दंड के रूप में, उनके पैर दो लकड़ी के लट्ठों में फंसा दिए जाते थे.

लोहे का कॉलर

Leg shackles

पैरों की हथकड़ी

हथकड़ी

कुछ भयानक उपकरण जिनका इस्तेमाल दासों को सजा देने के लिए उपयोग जाता था.
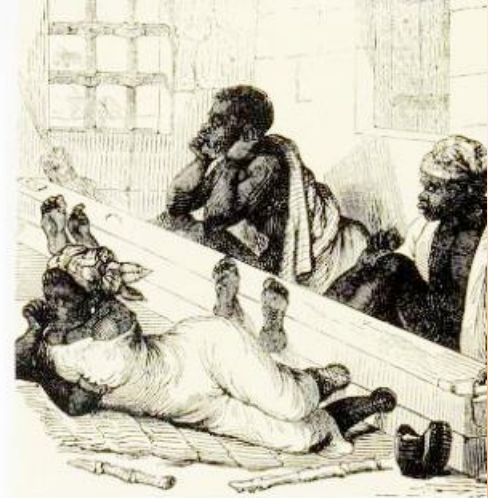
बच निकलना!

स्वाभाविक रूप से, बहुत से दास, विशेषकर जो मुक्त राज्यों के पास रहते थे वे अक्सर भागने की कोशिश करते थे. पकड़े जाने पर उन्हें क्रूर दंड दिया जाता था, लेकिन फिर भी हर साल सैकड़ों गुलाम, भागने में सफल होते थे.

"अंडरग्राउंड-रेलरोड" नामक एक साहसी भागने वाले संगठन ने, हज़ारों गुलामों की भागने में मदद की. यह संगठन श्वेत उन्मूलनवादियों और अश्वेतों द्वारा चलाया जाता था. वो भागने वालों की मदद करते और भगोड़ों के लिए सुरक्षित छिपने के स्थान खोजते थे. सबसे साहसी सहायकों में से एक हेरिएट टूबमैन नाम की एक पूर्व दास थीं, जिन्होंने 300 से अधिक गुलामों की, स्वतंत्रता का नेतृत्व किया.

नीचे: हेरिएट टूबमैन.

ऊपर: "द लिबरेटर" उन्मूलनवादियों की एक पत्रिका.

उत्तर में पूर्व दासों का हमेशा स्वागत नहीं होता था. गोरे मज़दूरों को, पूर्व दासों से उनकी नौकरी खाने का डर रहता था. उत्तर, गुलामों के लिए हमेशा एक सुरक्षित ठिकाना नहीं था. उत्तर और दक्षिण के बीच विभाजन को रोकने के लिए, एक क्रूर कानून पारित किया गया था, जो स्वतंत्रता से बचकर भागे गए लोगों को दक्षिण में वापस भेजने की अनुमति देता था. वास्तव में सुरक्षित रहने के लिए गुलामों को कनाडा पहुंचना होता था. 1833 में ब्रिटिश साम्राज्य (कनाडा जिसका एक हिस्सा था) में दासता को समाप्त कर दिया गया था.

भागे हुए दासों ने सार्वजनिक रूप से उत्तरी और यूरोपीय लोगों को, दासता के बारे में तथ्य बताए. फ्रेडरिक डगलस ने एक दास-विरोधी सभा में कहा, "मैंने अपना सिर, अपने अंग, अपना शरीर अपने मालिक से चुराया और फिर मैं उनके साथ यहाँ भागकर आया."

नीचे: एक पोस्टर जो भगोड़े दासों को पुनः कब्जा किए जाने से सावधान रहने की चेतावनी देता है.

नीचे: भगोड़े दासों को पकड़े जाने पर भयानक दंड का सामना करना पड़ता था.

गुलाम विद्रोह

गुलाम विद्रोह, कभी-कभी ही होते थे और वे अक्सर सफल भी नहीं होते थे.

अमेरिका में बहुत कम ही बड़े गुलाम विद्रोह हुए. दासों पर कड़ी निगरानी रखी जाती थी, उनका काम थका देने वाला होता था और उनका स्वास्थ्य अक्सर बहुत खराब रहता था.

विद्रोह की योजना बनाना आसान नहीं था, और उत्तर में उन्मूलनवादियों के अभियान के कारण, गुलाम मालिक हमेशा सतर्क रहते थे.

एक गणना के अनुसार अमेरिका में 1741 और 1800 के बीच पचास, और 1791 और 1856 के बीच लगभग 210 दास विद्रोह हुए. लेकिन इनमें से अधिकांश बहुत छोटे थे.

यहां तक कि उनमें से सबसे बड़ा विद्रोह भी कोई बड़े पैमाने का विद्रोह नहीं था, हालांकि उसने गोरों के बीच आतंक जरूर पैदा किया. इसका नेतृत्व नट टर्नर ने किया, जो मानते थे कि ईश्वर उनके पक्ष में था. उन्होंने शुरू में कुल्हाड़ियों और चाकुओं का उपयोग और बाद में जब्त की गई बंदूकों का इस्तेमाल किया. नेट और शायद सत्तर अन्य दासों ने मिलकर, पचास गोरे मालिकों, महिलाओं और बच्चों को मार डाला. फिर वे जंगल में भाग गए और छह सप्ताह तक मुक्त रहे.

उसके बाद विद्रोह समाप्त हो गया और फिर नट टर्नर और सोलह अन्य लोगों को पकड़ लिया गया और उन्हें फांसी दे दी गई. विद्रोह के दौरान कई निर्दोष अश्वेतों के साथ, गोरों द्वारा बेहद क्रूर व्यवहार किया गया, और बाद में दासों की स्थिति और भी खराब हो गई. प्रेस और भाषण की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करने वाले कानून पारित किए गए.

दायें: नेट टर्नर की खोज और पुनः कब्जा.

गुलामी का अंत

उन्नीसवीं सदी के मध्य तक गुलामी के खिलाफ अभियान अपनी चरम ऊंचाई पर पहुंच गया था. लेकिन उत्तरी उन्मूलनवादियों के विरोध ने, दक्षिण के लोगों को और अधिक जिद्दी बना दिया था. अमेरिकी राष्ट्र ने खुद को तोड़ना शुरू कर दिया. उसके नतीजतन गृहयुद्ध (1861-65) हुआ. हालांकि युद्ध केवल गुलामी के मुद्दे पर नहीं लड़ा गया था, लेकिन गुलामी के बिना शायद युद्ध होता ही नहीं.

1863 में राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन - जो उत्तरी राज्यों के नेता थे, ने सभी दासों को मुक्त घोषित कर दिया. लेकिन युद्ध फिर भी एक-दो साल तक और खिंचता रहा. अंततः उत्तर की जीत हुई और दासों को मुक्त कर दिया गया. हालांकि, लिंकन की बाद में हत्या कर दी गई, पर मुक्त किए गए दासों के हालात पहले की तुलना में थोड़ा बेहतर थे. गुलामों के काले वंशजों को, अभी हाल ही में गोरे अमेरिकियों जैसी बराबरी मिली है.

मुक्त दास, लिंकन की घोषणा के बाद उत्तर की ओर पलायन करते हुए.

अंत